International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938 January-June 2024, Submitted in March 2024, ISSN -2393-8048

"नारी विषयक नीति कथाएँ: पञ्चतंत्र और हितोपदेश के सन्दर्भ में"

डॉ. प्रवीन कुमार, सहायक प्रोफेसर, डी.ए.वी. कॉलेज, पेहवा (कुरुक्षेत्र)

प्रस्तावना

भारतीय नीति साहित्य का महत्वपूर्ण अंग पञ्चतंत्र और हितोपदेश जैसे ग्रंथों में नारी विषयक दृष्टिकोण का विस्तृत विवेचन मिलता है। ये ग्रंथ जहाँ एक ओर समाज को व्यावहारिक जीवन की शिक्षा प्रदान करते हैं, वहीं दूसरी ओर नारी की भूमिका, उसकी बुद्धिमत्ता, नैतिकता, चातुर्य एवं सामाजिक व्यवहार को भी गहराई से चित्रित करते हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य में नीति कथाएँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं थीं, बल्कि वे जीवन के गूढ़ रहस्यों, व्यवहारिक समस्याओं और नैतिक शिक्षा का स्रोत थीं। विशेष रूप से पञ्चतंत्र और हितोपदेश जैसे ग्रंथों में नारी पात्रों की उपस्थिति कभी निर्णायक, कभी प्रेरक और कभी चेतावनी स्वरूप होती है। इनमें नारी को केवल श्रृंगार की वस्तु नहीं, बल्कि बुद्धि, साहस, और व्यवहार-कुशलता की प्रतीक के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। यह शोध-पत्र नारी के विषय में इन दोनों ग्रंथों की कथाओं का तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसका उद्देश्य यह जानना है कि नीति साहित्य में नारी की छवि किस रूप में चित्रित की गई है, समाज के लिए उसकी क्या उपयोगिता मानी गई है, तथा उस समय की सामाजिक संरचना में नारी की वास्तविक स्थिति क्या थी। साथ ही, इस शोध में यह भी देखा जाएगा कि पञ्चतंत्र और हितोपदेश में वर्णित नारी चरित्र आज के परिप्रेक्ष्य में किस हद तक प्रासंगिक हैं। इस अध्ययन के माध्यम से नारी के बहुआयामी स्वरूप को समझने तथा नीति साहित्य में उसकी यथार्थवादी भूमिका का मूल्यांकन करना सम्भव होगा।

पञ्चतंत्र और हितोपदेश की संक्षिप्त पृष्ठभूमि

भारतीय नीति साहित्य की परंपरा अत्यंत समृद्ध और शिक्षाप्रद रही है, जिसमें 'पञ्चतंत्र' और 'हितोपदेश' दो ऐसे अद्वितीय ग्रंथ हैं, जिन्होंने न केवल भारत में अपितु सम्पूर्ण विश्व में नीति, नैतिकता, व्यवहार-कुशलता और जीवन-दर्शन का प्रकाश फैलाया है। पञ्चतंत्र की रचना संस्कृत के प्रख्यात विद्वान विष्णुशर्मा द्वारा लगभग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास की गई मानी जाती है। यह ग्रंथ मूलतः पाँच तंत्रों (भागों) में विभाजित है, जिनमें बालकों को नीतिशास्त्र, कूटनीति, मित्रता, संकट-प्रबंधन, युद्धनीति आदि की शिक्षा मनोरंजक पशु-पात्रों के माध्यम से दी गई है। राजा अमरशक्ति के तीन अशिक्षित पुत्रों को ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से रचित यह ग्रंथ मात्र कहानियों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह भारतीय जीवन-दर्शन, व्यवहार-नीति और राजनीति के मूल्यों का आदर्श संकलन है। पञ्चतंत्र की कहानियाँ बोधकथाओं के रूप में जानी जाती हैं, जिनमें पशु-पक्षियों को प्रतीक बनाकर मानवीय व्यवहार, बुद्धिमत्ता, छल-प्रपंच, नैतिक निर्णय और सामाजिक संरचना पर गहन प्रकाश डाला गया है। दूसरी ओर 'हितोपदेश' की रचना लगभग 9वीं-10वीं शताब्दी में नारायण पण्डित द्वारा की गई मानी जाती है। हितोपदेश को मूलतः पञ्चतंत्र से प्रेरणा प्राप्त है, किंतु इसमें और भी अधिक सरल भाषा, रोचक शैली, एवं स्पष्ट उद्देश्य की प्रस्तुति दिखाई देती है। नारायण पण्डित ने इस ग्रंथ की रचना राजा धवलचंद्र के पुत्रों को नीति, युक्ति, सदाचार और राजधर्म की शिक्षा देने के उद्देश्य से की। हितोपदेश चार भागों में विभाजित है: (1) मित्रलाभ, (2) सुहृद्भेद, (3) विग्रह, (4) संधि। इसमें भी पशु-पक्षियों के माध्यम से मानव समाज की विभिन्न समस्याओं और उनके समाधान को चित्रित किया गया है। हितोपदेश की विशेषता इसकी सहज व्याख्या, काव्यात्मक प्रस्तुति, और संस्कृत-सुभाषितों से समृद्धता है। दोनों ग्रंथों में नीतिपरक विचारों के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान, सामाजिक चेतना और नैतिक दृष्टिकोण को प्रमुखता दी गई है, जिसके कारण ये ग्रंथ आज भी शिक्षा, विशेषकर बाल शिक्षा और नैतिक प्रशिक्षण में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। पञ्चतंत्र और हितोपदेश केवल कहानी संग्रह नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय साहित्य की उस ज्ञान परंपरा के संवाहक हैं, जो तर्क, विवेक और सदाचार के माध्यम से जीवन को सफल, सुसंस्कृत और संतुलित बनाने का संदेश देती है।

पञ्चतंत्र में नारी की भूमिका

पञ्चतंत्र में नारी पात्रों का चित्रण विशेष रूप से नीति, व्यवहार और सामाजिक चेतना के संदर्भ में किया गया है। यद्यपि यह ग्रंथ मुख्यतः राजकुमारों को नीतिशिक्षा देने हेतु रचित है, परंतु इसमें नारी पात्रों की उपस्थिति अनेक महत्वपूर्ण कहानियों में दृष्टिगोचर होती है। पञ्चतंत्र की कहानियाँ पशु-पक्षियों के माध्यम से प्रतीकात्मक रूप से मानव समाज की संरचना, आचरण और विचारधारा को प्रकट करती हैं, और इस

संरचना में नारी की भूमिका को कभी सहायक, कभी निर्णायक, और कभी प्रेरणास्पद रूप में चित्रित किया गया है। ग्रंथ में नारी पात्रों को कभी बुद्धिमती और व्यवहारकुशल दर्शाया गया है, जैसे कि चतुर स्त्रियाँ जो संकट के समय अपने ज्ञान और सूझ-बूझ से समाधान निकालती हैं, तो कभी उन्हें छल-कपट और आकर्षण के प्रतीक रूप में दिखाया गया है, जहाँ उनकी भूमिका संकट उत्पन्न करने वाली भी मानी गई है। विशेषकर "सिंह और सियार" या "ब्राह्मण और मूर्ख स्त्री" जैसी कथाओं में स्त्री पात्रों के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि विवेकहीनता या अविश्वास जीवन में भारी हानि पहुँचा सकता है। वहीं दूसरी ओर, कुछ कथाओं में पत्नी की भूमिका अत्यंत आदर्श और मार्गदर्शक के रूप में भी प्रस्तुत की गई है, जो अपने पति को नीति, संयम और धैर्य का पाठ पढ़ाती है। पञ्चतंत्र की शैली में नारी का चित्रण एक ओर व्यवहार-नीति का उदाहरण बनकर आता है, तो दूसरी ओर सामाजिक सच्चाई और मानवीय प्रवृत्तियों का दर्पण भी प्रस्तुत करता है। नारी की भूमिका यहाँ केवल एक कथा-पात्र की नहीं है, बल्कि वह कभी कहानी का उद्देश्य स्पष्ट करने वाली, कभी चेतावनी देने वाली और कभी प्रेरणा देने वाली शक्ति के रूप में सामने आती है। पञ्चतंत्र में नारी को केवल एक सजावटी पात्र के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि उसे समाज में व्याप्त विविध भावनाओं, संबंधों, वासना, बुद्धि, प्रेम, छल और त्याग जैसे विविध पक्षों से जोड़ा गया है। इस प्रकार, पञ्चतंत्र की कहानियाँ नारी की भूमिका को एक बहुआयामी दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती हैं—जहाँ नारी शक्ति भी है, नीति भी है, और रहस्य भी।

हितोपदेश में नारी की भूमिका

हितोपदेश में नारी पात्रों का चित्रण भी नीति, सामाजिक व्यवहार, और मानव चरित्र की जटिलताओं के परिप्रेक्ष्य में किया गया है। नारायण पण्डित द्वारा रचित यह ग्रंथ पञ्चतंत्र से प्रेरित होकर अधिक सरल और काव्यात्मक शैली में लिखा गया है, और इसमें भी अनेक कथाओं में नारी पात्रों की उपस्थिति महत्वपूर्ण ढंग से देखी जाती है। हितोपदेश की कई कथाओं में नारी को एक सक्रिय भूमिका में दिखाया गया है, जहाँ वह किसी योजना का हिस्सा बनती है, षड्यंत्र रचती है या समस्या का समाधान प्रस्तुत करती है। उदाहरणस्वरूप, "बिल्ली और बंदर" जैसी कथाओं में नारी पात्रों को कभी-कभी प्रवंचना और अविवेक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो पुरुष पात्रों के पतन या भ्रम का कारण बनती हैं। यह चित्रण तत्कालीन समाज की उन मान्यताओं को दर्शाता है, जहाँ नारी को एक ओर सौंदर्य और मोह का केन्द्र माना जाता था, तो दूसरी ओर शक और संकट की जननी भी। परंतु हितोपदेश में नारी पात्रों की उपस्थिति केवल नकारात्मक दृष्टिकोण तक सीमित नहीं है। कई स्थानों पर उन्हें सहायक, विवेकी, और नीति-प्रदर्शक रूप में भी देखा गया है। नारी को परिवार के मूल केंद्र के रूप में चित्रित किया गया है, जो सद्गुणों का प्रचार करती है तथा अपने विवेक से संकट को टालने की क्षमता रखती है। हितोपदेश की शैली में उपदेशात्मकता और नैतिक बोध प्रमुख है, अतः नारी पात्रों का प्रयोग पाठक को सतर्कता, विवेकशीलता और सामाजिक सावधानी की शिक्षा देने हेतु किया गया है। यह भी स्पष्ट है कि हितोपदेश में नारी को केवल सामाजिक या पारिवारिक सीमा तक नहीं बाँधा गया, बल्कि उसे एक विचार-प्रेरक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो कभी स्वार्थ में डूबती है तो कभी त्याग का प्रतीक बनती है। नारायण पण्डित ने समाज में व्याप्त नारी की विभिन्न भूमिकाओं को कथाओं के माध्यम से इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि पाठक उनके व्यवहार, सोच और प्रभाव को समझ सके और उससे शिक्षा प्राप्त कर सके। नारी की यह बहुविध भूमिका हितोपदेश को और भी जीवन-सान्निध्य से भर देती है।

नारी के नैतिक पहलू – युक्ति, चातुर्य और व्यवहार

पञ्चतंत्र और हितोपदेश जैसे नीति ग्रंथों में नारी के नैतिक पहलुओं का चित्रण विविध रूपों में हुआ है। इन कथाओं में स्त्री की युक्ति, चातुर्य एवं व्यवहारिक कुशलता को उजागर करने वाले अनेक प्रसंग मिलते हैं। यहाँ स्त्रियाँ केवल सौंदर्य की प्रतीक नहीं, बल्कि नीति, युक्ति और बुद्धि की भी परिचायक हैं। इन ग्रंथों की अनेक कथाएँ ऐसी स्त्रियों को चित्रित करती हैं जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपने विवेक, साहस और युक्तिपूर्ण निर्णयों से परिस्थितियों पर नियंत्रण प्राप्त कर लेती हैं। इन ग्रंथों में नारी के चातुर्य को उसकी व्यवहारिक समझदारी से जोड़ा गया है। वह पारिवारिक, सामाजिक तथा राजनीतिक परिवेश में अपनी भूमिका को समझती है और अपनी उपस्थिति से घटनाओं की दिशा मोड़ने में समर्थ होती है। जैसे पञ्चतंत्र की 'ब्राह्मण और धोबी' की कथा में धोबी की पत्नी अपने पति को न्यायोचित मार्ग दिखाती है और दंड से बचाती है। यह

उसकी नैतिकता और चातुर्य का सजीव उदाहरण है। इसी प्रकार हितोपदेश में भी ऐसी स्त्रियाँ मिलती हैं जो ज्ञान, विवेक, वाणी की कुशलता तथा तात्कालिक निर्णय क्षमता से युक्त होती हैं। यह चित्रण स्पष्ट करता है कि इन ग्रंथों में नारी को केवल भावुक या कोमल नहीं, बल्कि युक्ति और नीति की धुरी के रूप में देखा गया है। इन ग्रंथों के माध्यम से यह संदेश भी दिया गया है कि नारी केवल सजावट की वस्तु नहीं, वह परिवार और समाज की नींव है, जो अपने विवेक से विपत्ति को भी अवसर में बदल सकती है। इस प्रकार पञ्चतंत्र और हितोपदेश में स्त्री की भूमिका न केवल सहायक है, बल्कि वह प्रेरक और मार्गदर्शक के रूप में भी सामने आती है।

नारी के प्रति दृष्टिकोण – नीति बनाम यथार्थ

पञ्चतंत्र और हितोपदेश में नारी के प्रति दृष्टिकोण एक जटिल और बहुआयामी विषय है, जिसमें नीति की दृष्टि और तत्कालीन समाज की यथार्थ भावना दोनों की झलक मिलती है। इन ग्रंथों में जहाँ एक ओर स्त्री को बुद्धिमती, विवेकशील और चतुर के रूप में चित्रित किया गया है, वहीं दूसरी ओर कई कथाओं में स्त्री को विश्वासघात, छल और धोखे का प्रतीक भी माना गया है। यह विरोधाभास दरअसल उस समय की सामाजिक सोच का प्रतिबिंब है। नीति की दृष्टि से देखा जाए तो स्त्री को एक ऐसे पात्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो राजा, मंत्री या सामान्य जन की नीति-निर्धारण प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उसका वचन, उसका व्यवहार, उसकी विद्वत्ता – सभी नीति निर्माण में सहायक मानी गई है। पञ्चतंत्र की कई कथाओं में राजा अपनी रानियों के परामर्श से शासन करता है। परंतु जब हम यथार्थ के धरातल पर उतरते हैं, तो पाते हैं कि इन ग्रंथों में स्त्री के प्रति संदेह और भय का भाव भी प्रदर्शित किया गया है। विशेषकर हितोपदेश में ऐसी कथाएँ अधिक हैं जहाँ स्त्री के छल-प्रपंच, वाक्पटुता और लालच को नकारात्मक दृष्टि से देखा गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि तत्कालीन समाज में स्त्रियों के बढ़ते सामाजिक हस्तक्षेप को लेकर एक मानसिक चिंता भी थी, जो नीति कथाओं में प्रक्षिप्त रूप में उभरती है। इस प्रकार, नीति बनाम यथार्थ की दृष्टि से नारी के प्रति दृष्टिकोण में एक द्वंद्वात्मक स्थिति स्पष्ट होती है। यह न तो पूर्ण रूप से स्त्री विरोधी है, न ही नारी महिमा का एकतरफा गुणगान। बल्कि यह चित्रण उस यथार्थवादी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है जो नारी को उसकी सम्पूर्णता में – गुण-दोष सहित – स्वीकार करता है। यही दृष्टिकोण इन नीति ग्रंथों की बौद्धिक गहराई को प्रमाणित करता है।

लोकमानस में इन कथाओं की छवि

पञ्चतंत्र और हितोपदेश की नीति कथाओं में स्त्री पात्रों की जो छवि उभरकर आती है, वह समाज के उस काल के सामूहिक लोकमानस का प्रतिबिंब है। इन कथाओं में स्त्रियाँ न केवल कथानक की आवश्यक पात्र होती हैं, अपितु उनकी भूमिका नीति और युक्ति की दृष्टि से अत्यंत प्रभावशाली होती है। किंतु यह भी सत्य है कि अधिकांश कथाओं में स्त्री की छवि एक चतुर, चालाक, लोभी अथवा प्रमत्त रूप में अधिक उभरती है, जो पुरुष पात्र को संकट में डाल सकती है या अपनी इच्छा से घटनाओं की दिशा बदल सकती है। यह छवि उस समय के सामाजिक ढाँचे को दर्शाती है जहाँ नारी को अक्सर संदेह की दृष्टि से देखा जाता था और उसकी क्षमता को भले ही स्वीकारा गया हो, किन्तु उसे एक सीमित दायरे में ही प्रस्तुत किया गया। फिर भी, इस छवि के भीतर नारी की युक्तिपूर्ण सोच, उसकी सतर्कता और उसकी व्यवहारिक बुद्धि को नकारा नहीं गया है। यह दिखाता है कि लोकमानस में स्त्री एक रहस्यमयी, बुद्धिमती और अवसरवादिनी के रूप में प्रतिष्ठित थी, जिससे प्रेरणा भी ली जा सकती थी और जिसे सावधानी से समझा जाना आवश्यक भी था।

स्त्री की स्वतंत्रता एवं मर्यादा

पञ्चतंत्र और हितोपदेश की नीति कथाएँ, जहाँ एक ओर स्त्री की चतुराई और व्यवहारिकता को उजागर करती हैं, वहीं दूसरी ओर उसकी स्वतंत्रता और मर्यादा के बीच एक जटिल अंतर्संबंध को भी रेखांकित करती हैं। इन कथाओं में स्त्रियों को सीमित स्वतंत्रता मिली है, जो उनकी बुद्धिमत्ता के प्रयोग तक सीमित रहती है। स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने की शक्ति बहुत कम पात्रों में दिखाई देती है, और जब वह दिखाई देती है, तो प्रायः कथा उसे दंडित करती है या उसे नकारात्मक परिणामों के रूप में प्रस्तुत करती है। यह कथाएँ यह संदेश देती प्रतीत होती हैं कि नारी की स्वतंत्रता तभी मर्यादित मानी जाएगी जब वह सामाजिक एवं पारिवारिक सीमाओं के भीतर रहे। यह दृष्टिकोण तत्कालीन समाज की पुरुष-सत्तात्मक मानसिकता को प्रतिबिंबित करता है, जहाँ नारी की स्वतंत्रता को सहज रूप से संदेह की दृष्टि से देखा जाता था। हालांकि इन कथाओं में

कुछ ऐसी स्त्रियाँ भी हैं जो अपनी मर्यादा में रहते हुए बुद्धिमत्तापूर्वक कार्य करती हैं और प्रशंसा की पात्र बनती हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि इन ग्रंथों में स्त्री की स्वतंत्रता को मर्यादा के बंधन में बाँधकर प्रस्तुत किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय की सामाजिक दृष्टि में स्वतंत्रता और मर्यादा का संतुलन स्त्री के आचरण का मूलाधार था।

पुरुष पात्रों की दृष्टि में स्त्री

पञ्चतंत्र और हितोपदेश की नीति कथाओं में पुरुष पात्रों की दृष्टि से स्त्री का मूल्यांकन प्रायः एक विशेष मानसिकता को दर्शाता है। स्त्री पात्रों को पुरुष पात्रों द्वारा अक्सर संदेह, भय अथवा आकर्षण की दृष्टि से देखा जाता है। पुरुष पात्रों को कथाओं में सावधान किया जाता है कि वे स्त्रियों की मीठी बातों और सुंदरता से मोहित न हों, क्योंकि यह उन्हें संकट में डाल सकती हैं। यह दृष्टिकोण कथाओं में कई बार दोहराया गया है कि स्त्रियाँ अवसरवादी होती हैं और वे अपने लाभ हेतु किसी भी सीमा तक जा सकती हैं। पुरुष पात्रों की यह दृष्टि एक प्रकार की सामाजिक सुरक्षा चेतना को जन्म देती है, जिससे यह प्रतीत होता है कि स्त्रियों से दूरी बनाकर ही पुरुष अपनी सफलता सुनिश्चित कर सकते हैं। किंतु यह एक पक्षीय दृष्टिकोण है जो नारी के सकारात्मक पहलुओं को सीमित करता है। हालांकि कहीं-कहीं पुरुष पात्रों द्वारा नारी की बुद्धिमता और साहस की सराहना भी की गई है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह दृष्टिकोण पूर्णतः नकारात्मक नहीं था, परंतु एक सजग और सतर्क चेतावनी अवश्य निहित थी। यह दृष्टिकोण तत्कालीन समाज में व्याप्त पितृसत्ता और स्त्री को नियंत्रित रखने की प्रवृत्ति का परिचायक है।

बालकों को दी जाने वाली नारी विषयक शिक्षा

पञ्चतंत्र और हितोपदेश की कथाओं को प्रारंभिक शिक्षा के ग्रंथों के रूप में व्यापक रूप से स्वीकृति मिली है और इन्हें बच्चों को नैतिक शिक्षा देने हेतु प्रयुक्त किया जाता रहा है। इन कथाओं के माध्यम से जो बालकों को नारी विषयक शिक्षा मिलती है, वह मिश्रित भावभूमि पर आधारित है। एक ओर, कथाएँ उन्हें यह सिखाती हैं कि नारी बुद्धिमती, चालाक और संकटमोचक हो सकती है, तो दूसरी ओर यह भी सिखाती हैं कि नारी से सावधान रहना चाहिए क्योंकि वह अपने हित के लिए किसी को भी धोखा दे सकती है। बालकों के मन में इस प्रकार की कथाएँ स्त्री के प्रति एक जटिल छवि निर्मित करती हैं, जो उसके गुणों और अवगुणों का मिश्रण होती है। इस प्रकार की शिक्षा कभी-कभी बालकों में स्त्रियों के प्रति अविश्वास या उपहास की प्रवृत्ति को जन्म दे सकती है, जो समाज में लैंगिक असमानता की जड़ों को गहरा करती है। यह आवश्यक है कि आज के समय में जब इन कथाओं का पुनः पठन-पाठन हो, तो उनके यथार्थ को समझते हुए एक संतुलित एवं सकारात्मक दृष्टिकोण से बच्चों को स्त्री पात्रों के गुणात्मक पक्ष भी बताये जाएँ, ताकि वे समाज में स्त्री की यथार्थ भूमिका को सही प्रकार से समझ सकें और समानता का भाव विकसित कर सकें। पञ्चतंत्र और हितोपदेश में स्त्री पात्रों को जिस प्रकार चित्रित किया गया है, वह अन्य ग्रंथों जैसे – महाभारत, रामायण, कथा सरित्सागर, जातक कथाएँ तथा बृहत्कथामंजरी से भिन्न है। जहाँ रामायण और महाभारत में नारी पात्रों को कुलीन, आदर्शवादी, त्यागमयी और व्रतशील रूप में प्रस्तुत किया गया है, वहीं पञ्चतंत्र व हितोपदेश की स्त्रियाँ व्यवहारिक बुद्धि, चतुरता, धूर्तता एवं स्वार्थ-चिंतन के साथ चित्रित होती हैं। उदाहरणस्वरूप, 'कैकेयी' या 'द्रौपदी' जहाँ सत्ता, अधिकार और धर्म के द्वंद्व में उलझी स्त्रियाँ हैं, वहीं पञ्चतंत्र की 'धूर्त नायिका' केवल युक्ति और लोभ से प्रेरित दिखती है। जातक कथाओं में बुद्ध की दृष्टि से स्त्री प्रायः मोह और भटकाव का कारण होती है, जबकि बृहत्कथा मंजरी में स्त्री चरित्रों में काम और धूर्तता अधिक प्रमुखता से वर्णित है। इन तुलनात्मक दृष्टियों से स्पष्ट होता है कि पञ्चतंत्र और हितोपदेश की स्त्रियाँ न तो आदर्शवादी हैं, न ही पूरी तरह दोषपूर्ण, बल्कि वे तत्कालीन सामाजिक यथार्थ को अधिक सजीवता से प्रकट करती हैं। इस प्रकार इन ग्रंथों में स्त्रियों का निरूपण न तो अत्यधिक उदात्त है और न ही केवल तिरस्कार का पात्र, अपितु मानवीय व्यवहार की विविध छायाओं का प्रतिनिधित्व करता है। पञ्चतंत्र और हितोपदेश दोनों ही नीति-साहित्य की श्रेणी में आते हैं, किंतु इनके उद्देश्य और प्रस्तुति में सूक्ष्म भेद विद्यमान है। पञ्चतंत्र में नीतियों को अधिक व्यावहारिकता एवं मानव स्वभाव की यथार्थपरक प्रस्तुति के साथ प्रस्तुत किया गया है, जहाँ पात्रों के रूप में पशु-पक्षियों का प्रयोग करके कथाओं को सरल, मनोरंजक व शिक्षाप्रद बनाया गया है। इसमें नारी पात्रों का चित्रण प्रायः चतुर, छलना करने वाली, और लोभ में पड़ने वाली स्त्री के रूप में हुआ है। इसके विपरीत, हितोपदेश में नैतिकता, धर्म और समाज के कल्याण की ओर अधिक ध्यान

दिया गया है। स्त्री विषयक दृष्टिकोण में हितोपदेश अपेक्षाकृत अधिक संयमित और संतुलित दृष्टिकोण अपनाता है। इसमें स्त्रियों को केवल कामना की वस्तु या द्वेष का कारण नहीं बताया गया, अपितु उनके विवेक, स्नेह और त्याग के गुण भी अंकित किए गए हैं। आलोचनात्मक रूप से देखें तो पञ्चतंत्र अधिक यथार्थवादी जबकि हितोपदेश अधिक आदर्शवादी बनता है। दोनों में नैतिक शिक्षा का उद्देश्य प्रमुख है, किंतु स्त्री चित्रण की दिशा में दृष्टिकोण भिन्न होने से इन ग्रंथों का प्रभाव भी भिन्न-भिन्न होता है।

स्त्री-विषयक नीति कथाओं की शिक्षा में उपयोगिता

स्त्री-विषयक नीति कथाएँ न केवल प्राचीन भारतीय समाज की स्त्री-स्थिति को दर्शाती हैं, बल्कि वे आज की शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों के शिक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण उपकरण भी बन सकती हैं। इन कथाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को यह समझाया जा सकता है कि समाज में नारी के विविध रूप होते हैं – कहीं वह मातृवत् है, कहीं सहचरी, और कहीं युक्तियुक्त आलोचक। इन कथाओं में स्त्री की चातुर्य, व्यावहारिकता, वचनबद्धता, छल और लोभ के प्रसंग बच्चों को नीति और अनीति का भेद समझाने में सहायक हो सकते हैं। यदि इन कथाओं को समसामयिक दृष्टिकोण से पुनर्पाठ कर बच्चों को प्रस्तुत किया जाए, तो यह उन्हें नारी की भूमिका, समस्याएँ और समाज के प्रति उसके उत्तरदायित्व को जानने-समझने में सहायक होगा। आज की शिक्षा प्रणाली में स्त्री-विषयक दृष्टिकोण को केवल आलोचनात्मक न बनाकर, यथार्थ और विवेकपूर्ण बनाना अत्यंत आवश्यक है। इस कार्य में पञ्चतंत्र और हितोपदेश की कथाएँ सहायक सिद्ध हो सकती हैं, यदि उन्हें संवेदनशील और सुसंस्कृत दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया जाए।

नारी-नीति दृष्टिकोण की समकालीन प्रासंगिकता

वर्तमान समय में स्त्री-पुरुष के संबंधों में आए बदलाव, स्त्रियों की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सहभागिता तथा लैंगिक समानता की अवधारणाओं के बीच जब हम पञ्चतंत्र और हितोपदेश की नारी विषयक नीतियों को देखते हैं, तो अनेक विमर्श खुलते हैं। एक ओर ये कथाएँ हमें यह संकेत देती हैं कि स्त्री केवल कोमलता की प्रतिमूर्ति नहीं है, बल्कि उसमें युक्ति, प्रबंधन और आत्मरक्षा के गुण भी होते हैं। दूसरी ओर ये ग्रंथ कभी-कभी स्त्री को केवल मोहिनी, छली और भटकाने वाली शक्ति के रूप में भी प्रस्तुत करते हैं, जो आज की दृष्टि से एकपक्षीय प्रतीत हो सकता है। समकालीन स्त्री विमर्श के अनुसार, आज स्त्रियों को केवल नैतिकता की पाठशाला में नहीं, अपितु नेतृत्व, विज्ञान, राजनीति और व्यवसाय के मंचों पर भी देखा जा रहा है। इस बदलती चेतना में पञ्चतंत्र-हितोपदेश की कथाएँ यदि स्त्रियों के बहुआयामी स्वरूप को दर्शाने लगें, तो वे अधिक प्रासंगिक बन सकती हैं। अतः आज आवश्यक है कि इन ग्रंथों का पुनर्पाठ समसामयिक चेतना के साथ हो, जिससे हम स्त्री के नीति पक्ष को केवल आलोचना या प्रशंसा के तराजू पर न तौलें, अपितु उसे एक पूर्ण मानव के रूप में स्वीकार करें।

निष्कर्ष

पञ्चतंत्र और हितोपदेश जैसे नीति-ग्रंथ न केवल प्राचीन भारतीय साहित्य के गौरवपूर्ण स्तंभ हैं, बल्कि वे समाज की यथार्थवादी चित्रणशैली एवं नैतिक शिक्षा के अमूल्य साधन भी हैं। इन ग्रंथों में स्त्री पात्रों की उपस्थिति कभी प्रेरक है, कभी भयावह, तो कभी विवादास्पद। उन्होंने नारी के व्यवहार, चातुर्य, लोभ, प्रेम, बुद्धिमत्ता और छल-युक्तियों के माध्यम से पाठकों को नैतिक निर्णय लेने की प्रेरणा दी है। नारी विषयक दृष्टिकोण को लेकर इन कथाओं में कोई एकसमान भाव नहीं है, अपितु वे समाज के विभिन्न आयामों को उजागर करते हैं। आलोचकों ने जहाँ इसे स्त्री के प्रति संकुचित दृष्टिकोण माना, वहीं कुछ ने इसे यथार्थवादी माना है। यद्यपि कुछ कथाओं में नारी को छल और संकट की प्रतीक बताया गया है, फिर भी इससे इतर कथाएँ यह भी दर्शाती हैं कि नारी नीति, विवेक और सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करती है। इन ग्रंथों की स्त्री न तो केवल वशीकरण का साधन है, न ही केवल त्याग की प्रतिमूर्ति, बल्कि वह एक जटिल मानव-स्वभाव की वाहिका है। आधुनिक समाज में यदि इन कथाओं को विवेकपूर्ण पुनर्पाठ के माध्यम से प्रस्तुत किया जाए, तो वे स्त्री-विषयक संवेदनशीलता और समता को विकसित करने में सहायक हो सकती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. **पञ्चतंत्र** — विष्णु शर्मा (अनुवाद: रामचन्द्र शुक्ल), साहित्य अकादमी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. **हितोपदेश** — नारायण पण्डित (सम्पादक: के. पी. पाराशर), चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।
3. **भारतीय साहित्य में नारी की छवि** — डॉ. उषा शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

4. **भारतीय नीति साहित्य: एक तुलनात्मक अध्ययन** — डॉ. रामप्रसाद मिश्र, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
5. **Women in Indian Myth and Literature** — Mandakranta Bose, Oxford University Press.
6. **भारतीय संस्कृति में स्त्री का स्थान** — प्रो. कपिल कपूर, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
7. **नारी विमर्श और संस्कृति** — डॉ. ममता सिंह, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।
8. **Women in Ancient India** — Romila Thapar (Essays), Penguin Books, India.
9. **नैतिक शिक्षा और नीति ग्रंथ** — डॉ. नरेन्द्र कुमार, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
10. **Panchatantra: A Philosophical and Ethical Study** — Patrick Olivelle, Harvard University Press.
11. **Indian Fables and Ethics** — Edited by Arvind Sharma, Routledge India.
12. **हितोपदेश और सामाजिक चेतना** — डॉ. विनीता चौधरी, भारतीय विद्या संस्थान, प्रयागराज।